اپریل ۲۰۰۷ء

# ماہنامہ شعاع عمل لکھنؤ

قال اللہ تبارک و تعالیٰ

قَدْ جَاءَكُم مِّنَ اللَّهِ نُورٌ وَكِتَابٌ مُّبِينٌ

بیشک اللہ کی طرف سے تمہارے پاس نور آیا ہے اور روشن کتاب

اقرأ باسم ربك الذى خلق




مؤسسۂ نور ہدایت حسینیۂ غفران مآب لکھنؤ-۳

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd. No. SSP/LW/NP-75/2005-07

Monthly

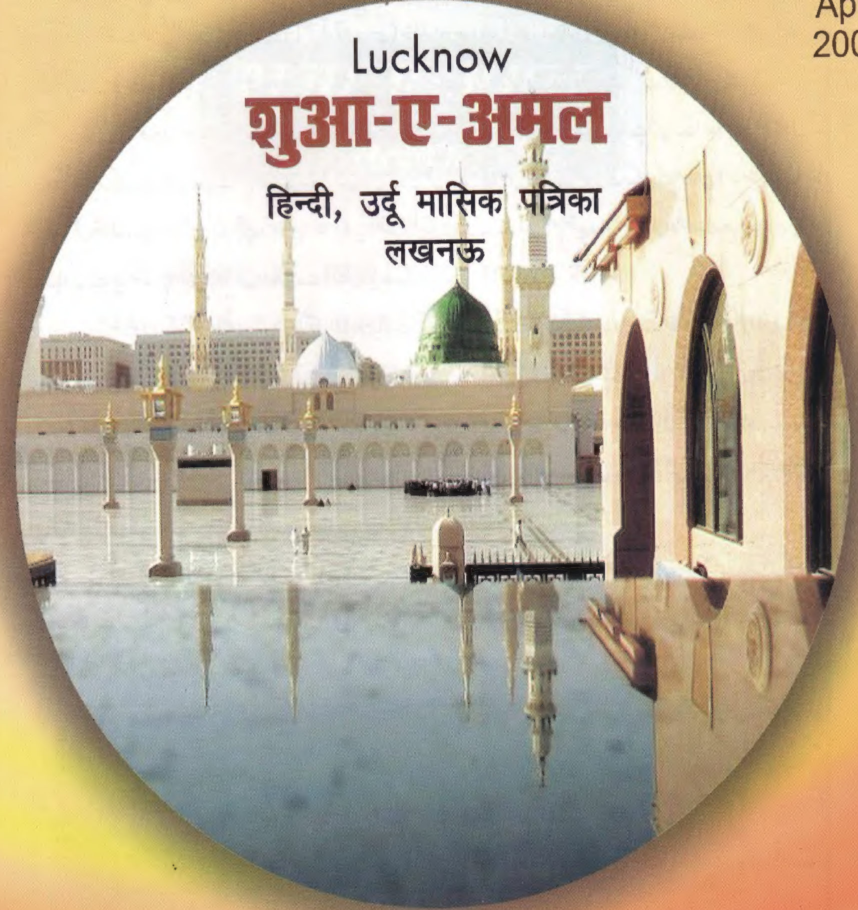
# SHUA-E-AMAL

April
2007

Lucknow

# शुआ-ए-अमल

हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका
लखनऊ






**NOOR-E-HIDAYAT FOUNDATION**
Imambara Ghufran Maab, Chowk
LUCKNOW-3 (U.P.) INDIA
Phone : 2252230

वर्ष–3

R.N.I. No. UPBIL/2004/13526
Postal Regd No-SSP/LW/NP-75/2005-07

अंक–10

माह अपैल – 2007 लखनऊ

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन की
हिन्दी, उर्दू मासिक पत्रिका

# शुआ-ए-अमल

''लखनऊ''

संरक्षक

**मौलाना सै. कल्बे जवाद नक़वी साहिब**

सम्पादक

**सै. मुस्तफ़ा हुसैन नक़वी 'असीफ़' जायसी**

उप–सम्पादक

**हैदर अली**

**सलाहकारी परिषद**

प्रोफेसर सै0 अली मुहम्मद नक़वी, प्रोफेसर सै0 हुसैन कमालुद्दीन अकबर,
मु0 र0 आबिद, सैय्यद समीउल हसन वसीम, तज़हीब नगरौरी

वार्षिक – 200 रु

मिलने का पता

क़ीमत – 20 रु

नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन
इमामबाड़ा हज़रत गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड
चौक लखनऊ – 3 (उ.प्र.) भारत फोन न0 0522–2252230

website: www.noorehidayat.com
e-mail: noorehidayat@noorehidayat.com

सै. कल्बे जवाद नक़वी प्रिन्टर, पब्लिशर और प्रोपराइटर ने मासिक शुआ–ए–अमल (उर्दू, हिन्दी) निज़ामी आफ़सेट प्रेस विक्टोरिया स्ट्रीट लखनऊ से छपवाकर आफ़िस नूर–ए–हिदायत फ़ाउण्डेशन इमामबाड़ा गुफ़रानमआब मौलाना कल्बे हुसैन रोड लखनऊ–3 से प्रकाशित किया। सम्पादक : सै0 मुस्तफा हुसैन नक़वी 'असीफ जाएसी'।

# फ़ेहरिस्ते मज़ामीन



## अक़वाले रसूले ख़ुदा (स0)

1– जो शख़्स किसी मुसलमान को धोखा दे या नुक़सान पहुँचाए या फरेब से काम ले वह हम में से नहीं।

2– तुम में से सबसे नेक शख़्स वह है जो अपने ग़ुस्से को पी जाए और ताक़त के बावजूद अपने नफ़्स पर क़ाबू रखे।

3– बेहतरीन नेकी लोगों में इत्तेहाद क़ायम करना है।

# सीरते मुहम्मदी के कुछ पहलू

प्रोफेसर अल्लामा सै0 अली मुहम्मद नक़वी साहब क़िब्ला

सन् 570 ई0 में अरब की अन्धेरी दुनिया में वह सितारा सामने आया जिसकी तरफ न चाहते हुए भी हर एक की नज़रें उठ गयीं और जिसका नूर दिनोदिन बढ़ता चला गया। यहाँ तक कि आज उसी इल्म व अमल के सूरज से सारी दुनिया फाएदा उठा रही है।

यह खुदा के पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) की पाक ज़ात थी।

जब हज़रत मुहम्मद (स0) पैदा हुए तो अरब में शायद ही कोई ऐसी बुरी बात बची होगी जो न होती हो। क़बीलों में बात–बात पर जंग होती थी। अमीरी व ग़रीबी में वह ज़बरदस्त खाड़ी थी जिसका भरना तक़रीबन नामुमकिन था। ज़ुल्म व सितम आम था। हमदर्दी का लफ़्ज़ अरबों की डिक्शनरी में ही नहीं था। और झूठ उनकी ज़बानों पर चढ़ा हुआ था।

उस वक़्त रसूल (स0) पैदा हुए और जब छोटे थे उसी वक़्त ''सादिक़'' के लक़ब से मक्के वालों में मशहूर हो गये। हर एक आपकी दी हुई ख़बर को सच्चा मानने के लिऐ अपने ज़मीर के फैसले से मजबूर था। चुनानचे जब हज़रत (स0) इस्लाम का पैग़ाम सुनाने के लिए पहाड़ की ऊँचाई पर तशरीफ ले गये और अरबों से सवाल किया कि अगर मैं कहूँ कि एक लश्कर इस पहाड़ के पीछे से तुम पर हमला करने के लिये आ रहा है तो क्या तुम यक़ीन करोगे? तो साभी लोगों ने मुहम्मद मुस्तफा (स0) की सच्चाई की गवाही देते हुए कहा कि हमने इस मुँह से कोई झूठ बात नहीं सुनी। इसलिए हम यक़ीन करने के लिये मजबूर हैं। मिसाल मश्हूर है कि झूठा हर एक को झूठा ही समझता है मगर जब झूठे भी किसी को सच्चा कहें तो इससे उसकी ग़ैर मामूली सच्चाई का अन्दाज़ा किया जा सकता है।

सच्चाई ख़ुदा के रसूल (स0) की सीरत का वह अहम पहलू है जिसको दोस्त व दुश्मन सब मानते हैं। ख़ुदा की मख़लूक़ के साथ हमदर्दी भी सीरते मुहम्मदी का अहम हिस्सा है। अवाम को गुमराही से बचाने ही के लिए उन्होंने इस्लाम को फैलाने में इतनी तकलीफें उठायीं और लाइलाहा इल लल्लाह कहने की दावत थी, जिसकी वजह से तेरह साल तक बराबर मुबारक जिस्म पर पत्थर खाए और इसी लिए अज़ीज़ वतन को छोड़ना पड़ा। और फिर उसी के लिए अपने चचा हमज़ा और भाई जाफर को ख़ुदा के रास्ते में कुर्बान करना पड़ा। यही हमदर्दी और अख़लाक़ की ख़ूबियाँ थीं जिनसे हज़ारों भटके हुए इन्सान रास्ते पर आ गये। वह वाक़ेआ किस मुसलमान को याद न होगा कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) मक्का के बाज़ार से तशरीफ ले जा रहे थे तो एक बुढ़िया अपने घर का कूड़ा–करकट इकटठा करके आपके मुबारक सर पर फेंक दिया करती थी। कोई दूसरा होता तो न जाने क्या कर गुज़रता मगर हज़रत ने कुछ न किया और रोज़

उसी रास्ते से तशरीफ ले जाते रहे। यहाँ तक कि कुछ दिन ऐसे गुज़रे जब वह कूड़ा सर पर नहीं आया। पैग़म्बरे इस्लाम (स0) को फिक्र पैदा हुई, महल्ले वालों से पूछने पर पता चला कि वह औरत बहुत सख़्त बीमार है। रसूल (स0) उसकी ख़बर लेने के लिये गये। उसने हज़रत को देखा तो वह अपनी नीच सोंच की वजह से समझी कि शायद रसूल (स0) बदला लेने आये हैं और उसने हज़रत से कहा कि ऐ मुहम्मद! तुम ऐसे वक़्त आए हो जब मैं बीमार हूँ। रसूल (स0) ने उसको इतमिनान दिलाया कि नहीं मैं तो तुम्हारा हाल पूछने के लिए आया हूँ। इस अख़लाक़ को देखकर वह इतनी मुतास्सिर (Impress) हुई कि उसने कहा कि आप अपना पैग़ाम मुझे बताइये मैं उस पर ईमान लाऊँगी और फिर वह मुसलमान हो गई...

यह तो था एक क़िस्सा, वरना इतिहास के पन्नों पर ऐसे न जाने कितने क़िस्से बिखरे पड़े हैं जिनसे रसूल (स0) का इन्सानों के साथ मुहब्बत व हमदर्दी का शौक़ और अख़लाक़ मालूम होता है। बराबरी, इस्लाम के बुनियादी उसूल में से एक है। इस्लाम में काले गोरे, मालदार व ग़रीब, अरबी व ग़ैरे अरबी में किसी तरह का कोई फर्क़ नहीं है बस फर्क़ है तो आमाल के हिसाब से है। इस्लामी बराबरी काग़ज़ की चीज़ बनकर नहीं रह गई बल्कि इस्लाम के सही रहनुमाओं ने इस पर अमल करके भी दिखा दिया। रसूले इस्लाम (स0) की सीरत और उनकी ज़िन्दगी में बराबरी को अहम दर्जा था। एक वाक़ेआ बहुत मश्हूर है कि एक बार रसूले इस्लाम (स0) के दरबार में एक मालदार साहब बैठे हुए थे कि इतने में रसूल (स0) के एक ग़रीब सहाबी फटे पुराने कपड़ों में आए और उन मालदार साहब के क़रीब बैठ गये। दौलतमन्द को यह बहुत बुरा लगा और शायद अपना घर होता तो निकाल देते मगर चूँकि यह हज़रत मुहम्मद (स0) का दरबार था इसलिए सब्र से काम लेते हुए बस अपने कपड़े समेट लिये। हज़रत के माथे पर बल आ गये और नाराज़ होकर कहा कि अगर तुम उसके पास बैठे रहते तो क्या तुम्हारी दौलत उसमें चली जाती या उसकी ग़रीबी तुम में आ जाती... इस क़िस्से से रसूल (स0) का सभी इन्सानों के साथ बराबरी का सुलूक सामने आता है।

गुलामों और कनीज़ों के साथ हज़रत के सुलूक का अन्दाज़ा इस वाक़ेए से हो जाता है कि जब रसूल (स0) ने अपनी इकलौती बेटी फातिमा ज़हरा (स0) को एक कनीज़ दी तो कह दिया कि देखो बेटी एक दिन तुम काम करना और यह आराम करेगी, एक दिन यह काम करेगी तुम आराम करना। मतलब यह था कि इसको तुमसे ज़्यादा तकलीफ न उठाना पड़े।

अब सिर्फ मुझे मुहम्मद (स0) की सीरत के एक पहलू की तरफ और ध्यान दिलाना है और वह अम्न पसन्दी है।

आमतौर पर दुनिया इस्लाम को जंगी मज़हब और हज़रत मुहम्मद (स0) को शिद्दत पसन्द की हैसियत से देखती और समझती है। लेकिन हक़ीक़त इससे हटकर है।

रसूले इस्लाम (स0) की ज़िन्दगी अम्न पसन्दी के साँचे में ढली हुई है कभी रसूल (स0) ने अपने अस्हाब को सख़्ती की दावत नहीं दी, बल्कि हमेशा ''ला तुफसिदू फिल अर्ज़ि'' ही का हुक्म देते रहे। यक़ीनन रसूल (स0)ने जंगें भी कीं और ओहद व ख़ैबर व ख़न्दक़ की शानदार जंगें

रसूल की ही सरदारी में लड़ीं गयीं। लेकिन यह सब जंगें रसूल (स0) की अपनी ज़रूरत के लिये नहीं थीं बल्कि उन पर थोपी गयीं थीं। और उनको मजबूर कर दिया गया था कि वह जंग करें। इसलिए कि यह सब जंगें बचाव करने वाली थीं और उनकी ज़िम्मेदारी मुशरिकों पर आती थी क्योंकि अगर वह चढ़ाई करके मदीने न आते तो रसूल उनके मरकज़ों पर हमला न करते मगर जब उन्होंने हमला कर दिया था, अब अगर रसूल (स0) मुक़ाबला न करते तो ज़ुल्म का दल बढ़ता ज़ालिमों की हिम्मत बढ़ती, और मदीने के ग़रीब मुसलमानों को तरह–तरह की तकलीफें बर्दाश्त करना पड़तीं। इसलिए रसूल (स0) लड़ने पर मजबूर हो गये और हुदैबिया में चूँकि रसूल आज़ाद थे और जंग न करने से भी कोई नुक़सान नहीं था इसलिए ख़ुदा के पैग़म्बर (स0) ने इतनी बड़ी जमाअत के साथ होने और आम मुसलमानों के इस ख़याल के बाद भी कि इस वक़्त जंग करना बुज़दिली है। बिना जंग किये देखने में दबकर सुल्ह करके मदीने वापस तशरीफ ले गये। हालाँकि कुछ ज़माने के बाद जब मुश्रिकों ने उन शर्तों की पाबन्दी नहीं की जो सुल्हनामे में लिखी थीं तो रसूल (स0) को फत्हे मक्का के लिये तशरीफ लाना पड़ा। मगर फत्हे मक्का के बाद जो तरीक़ा हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) ने इख़्तियार किया वह भी उनकी अम्न पसन्दी की तसदीक़ करता है। हज़रत ने अपने सख़्त से सख़्त दुश्मनों को अपने सामने बुलवाया और उनसे पूछा कि बताओ तुमको मुझसे क्या उम्मीद है?

ज़ाहिर है कि वह लोग जिन्होंने ने तेरह साल तक बराबर रसूल (स0) पर पत्थरों की बारिश की थी, जिन्होंने उनके सर पर कूड़ा–करकट फेंका था और उनको हर तरह से ज़लील करना चाहा था, अपने बारे में क्या उम्मीद रख सकते थे? मगर इन सबसे ऊपर रसूल (स0) के किरदार की वह बड़ाई थी जिसे वह शुरुआती उम्र से देख रहे थे। इसलिए उन्होंने हिम्मत करके कहा कि हम तो आपसे अच्छाई की ही उम्मीद रखते हैं।

इस पर रहमतुल लिलआलमीन की आँखों में आँसू आ गये और आपने यह हुक्म सुनाया कि जाओं तुम सबको आज़ाद किया जाता है... यह इस्लाम की वह अम्न पसन्दी थी जिसकी बेहतरीन मिसाल हज़रत मुहम्मद मुस्तफा (स0) ने पेश की!

यह तो थे रसूल (स0) की सीरत के कुछ रौशन पहलू लेकिन मुसलमानों ने रसूल (स0) की सीरत से क्या सबक़ हासिल किया यह बताते हुए क़लम शर्म महसूस करता है।

वह रसूल (स0) जो ज़िन्दगी भर सच बोलता रहा, जिसने इन्सानों के साथ हमदर्दी को अपनी ज़िन्दगी की निशानी बना लिया था। उसके मानने वाले आज झूठ पर झूठ बोलने में झिझक महसूस नहीं करते। बेगुनाहों पर ज़ुल्म व सितम करने में अपनी बड़ाई समझते हैं। और ग़रीबों को इन्सान न समझने में फख़्र महसूस करते हैं... यही वजह है कि मुसलमान बराबर अन्धेरों के गढ़ों में गिरते चले जा रहे हैं। अगर वह रसूल (स0) की सीरत के कम से कम इन्हीं पहलुओं पर अमल करें जिन पर इस छोटे से मज़मून में ध्यान दिलाया गया है तो शायद वह एक बार फिर दुनिया के लिये नमूना (Ideal) साबित हो सकें।



# एक सबक़ इस्लाम से

सफ़वतुल उलमा मौलाना सैय्यद क़ल्बे आबिद साहिब क़िब्ला ताबा सराह

**पिछले शुमारे से आगे**

## नबूवत (ईश्वरीय दूतवाद)

इस्लाम के उसूल में एक, अस्ल नबूवत या ईश्वरीय दूतवाद है इसका मानना भी आवश्यक है। इसका अर्थ यह है कि ईश्वर ने व्यक्तियों की हिदायत (पथ प्रदर्शन) और रहनुमाई यानी रास्ता दिखाने और उन्हें इहिलोक और परलोक में सफलता प्राप्त करने का पथ प्रदर्शन करने के लिए अपनी ओर से कुछ लोगों को नियुक्ति किया जो यद्यपि कि मनुष्य थे मगर अपने अन्दर की पवित्रता और आत्मा की बुलन्दी या ऊँचाई के कारण, इसकी योग्यता रखते थे ईश्वर के आदेश प्राप्त कर सकें। उसके उद्देश्य और मर्ज़ी को समझकर दूसरों तक पहुँचा सकें। उनके आचरण और कर्म की मज़बूती पर ईश्वर को इतना भरोसा होता है कि वह जानता है कि मेरी मर्ज़ी के विरुद्ध कोई बात नहीं करेंगे। ईश्वर को तौफीक़ (प्रेरणा) उनकी साथी बनके उनको भूल–चूक से बचाती है। इसी ''मलका'' (ऐसी दक्षता जो प्रवृत्ति बन जाये) का नाम ''इस्मत'' (दोष से सुरक्षित होना) है। और इस्मत की आवश्यकता इसलिए है लोगों को उनकी बात पर पूरा भरोसा और उनके सन्देश पर पूरा विश्वास रहे। उनके पंथ वाले उनके बताये हुए मार्ग और कही हुई बातों पर आँखें बन्द करके इतमीनाने नफ़्स (आत्म सन्तोष) के साथ अमल कर सकें। ईश्वर ने इस प्रकार के बन्दों (व्यक्तियों) को प्रत्येक देश और जाति के मार्ग प्रर्दशन के लिए भेजा जिनमें से कुछ प्रसिद्ध पैग़म्बरों का उल्लेख कुर्आने मजीद में है।

हज़रत आदम पैग़म्बरों की श्रंखला की, सबसे पहली कड़ी और अन्तिम पैग़म्बर जिन पर वह सिलसिला पूरा हो गया, हमारे पैग़म्बर जनाब मुहम्मद मुस्तफा (स0) हैं। जिनके पश्चात न कोई शरीअत (धर्मविधि) आएगी और न कोई पैग़म्बर भेजा जायेगा। नबूवत अर्थात् पैग़म्बरी की समाप्ति का विश्वास भी दीन या धर्म के अनिवार्य विश्वासों में से है। कुर्आन मजीद और सहीह हदीसों (प्रमाणिक अनुहारों) जिन्हें सार्थक निरन्तरता प्राप्त है, इन सबसे हमारे पैग़म्बर पर नबूवत अर्थात् पैग़म्बरी की समाप्ति सिद्ध और निश्चित है। अतः नबूवत की समाप्ति का इन्कार करने वाला इस्लाम की परिधि से बाहर और ग़ैर मुस्लिम है।

जिन पैग़म्बरों का नाम कुर्आन मजीद या 'सहीह हदीसों' में है, उन पर विस्तार पूर्वक और और जिनका विस्तृत वर्णन नहीं मिलता उन पर इजमालन यानी अविस्तृत रूप से ईमान या विश्वास रखना चाहिए। अर्थात् हम उन समस्त पैग़म्बरों को मानते हैं जो ईश्वर की ओर से आए हैं चाहे वह जो भी हों। कुर्आन मजीद ने इसको स्पष्ट कर दिया है कि कुछ पैग़म्बरों का वर्णन किया गया है और कुछ का वर्णन नहीं किया गया है।

सूरा ''निसा'' की 162 वीं आयत में कहा जा रहा है कि ''कुछ पैग़म्बर ऐसे हैं जिनकी हम पहले चर्चा कर चुके हैं और कुछ ऐसे हैं जिनकी चर्चा हमने नहीं की है।''

प्रसिद्ध यह है कि ईश्वर को ओर से भेजे हुए पैग़म्बरों की संख्या एक लाख चौबीस हज़ार है। कुर्आन मजीद और इस्लाम की नज़र में मनुष्यों का पथ प्रदर्शन इतना महत्वपूर्ण और आवश्यक है कि जिस व्यक्ति (फ़र्द) से संसार में मानववंश चला अर्थात् जनाब आदम, ईश्वर ने उन्हीं को अपना नबी और ख़लीफा बनाया ताकि कोई एक व्यक्ति भी यह न कह सके कि मेरे लिए रास्ता दिखाने वाला अर्थात् पथ प्रदर्शक न था।

## पैग़म्बरों की आवश्यकता:

कुर्आन मजीद नबियों और रसूलों (पैग़म्बरों) की श्रंखला को क़ायम करने की वजह का वर्णन करते हुए एलान करता है, ''हमने अपने रसूलों को उनकी सच्चाई (सत्यता) की खुली हुई निशानियाँ देकर भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ाने अमल (कर्म की तुला) उतारी ताकि मानव वंश अदल (न्याय) या इंसाफ के द्वारा निरन्तरता और सुदृढ़ता यानी बक़ा और मज़बूती प्राप्त करें।

इस आयत से निष्कर्ष यह निकलता है कि बग़ैर ईश्वर की शिक्षा के सहीह अर्थों में इंसाफ या न्याय मिलना सम्भव नहीं है। और न्याय के बिना मानवता की नीव मज़बूत नहीं हो सकती। न्याय का अर्थ है प्रत्येक को उसका हक़ (अधिकार) मिलना। व्यक्ति को वह हक़ प्राप्त हो, जो उसके लिए उचित है। समाज को वह हक़ मिले कि जिसका वह हक़दार है। व्यक्ति अपने नफ़्स (अपने आप) के साथ वह व्यवहार करे कि नफ़्स पर जुल्म न होने पाये। शरीर और आत्मा दोनों के साथ न्याय किया जा सके। न्याय के समक्ष 'अन्याय' (जुल्म) है, जुल्म का अर्थ है बात का बेजा होना। तो न्याय का अर्थ हुवा कि मौक़े और अवसर के अनुसार कार्य। हम कभी फैसला नहीं कर सकते कि कोई कार्य बे मौक़ा है या मौक़े के अनुसार है। जब तक सम्बन्धित कार्य या अमल की मंजिल तय न हो जाए। उदाहरणार्थ एक व्यक्ति हमारी महफिल या गोष्ठी में आये तो जब तक हम उसके रुतबे से वाक़िफ (अवगत) न हों, यह फैसला सम्भव नहीं कि उसका स्वागत और आव–भगत किस प्रकार करें। उसे किस स्थान पर बिठायें। लेकिन मनुष्य का ज्ञान इतना महदूद (सीमित) है कि वह स्वयं अपने नफ़्स ही के सम्बन्ध में फैसला नहीं कर सका कि उसमें क्या–क्या गुण हैं। हमारा नफ़्स ही इतना तहदार है कि आज तक हम इसी को न पहचान सके।

मनुष्य के प्रत्येक कार्य, नीयत और विचार से भी उसका नफ़्स प्रभावित होता है। यह प्रभाव कभी चेतना की सतह पर ज़ाहिर (प्रगट) हो जाता है और कभी अवचेतन के पर्दे में छुपा रहता है, जो स्पष्ट होने के लिए अवसर की प्रतीक्षा करती है। हमें नहीं मालूम कि हमारे किस कर्म या नीयत का प्रभाव हमारी चेतना अथवा अवचेतना पर क्या पड़ेगा! यही नही, हम एक घर के रहने वाले भी हैं, एक परिवार के सदस्य भी हैं, एक देश में बसते भी हैं। किसी क़ौम में दाख़िल हैं

और पूरी मानव जाति का एक अगं हैं। हमारे हर कार्य का सम्बन्ध इन सबसे भी है। जिस तरह एक छोटी सी कंकरी जब तालाब में पड़ती है तो उसकी लहरें दूर–दूर तक जाती हैं, उसी तरह हमारा हर अमल (कार्य) भी हमारे घर–परिवार और समाज को प्रभावित करता है। मैंने पहले ही यह बात सिद्ध कर दी है कि हम अपने निज ही के बारे में ही न्याय करने की योग्यता नहीं रखते तो हम कैसे यह बात तय कर सकते हैं कि हमारा सम्बन्ध परिवार वालों, ख़ानदान वालों, समाज वालों और मानव जाति के प्रति क्या हो! और उनके क्या–क्या हक़ हम पर हैं! सब सांसारिक जीवन के लिए न्याय करने का बोझ अकेले हमारी बुद्धि सहन नहीं कर सकती तो कैसे यह बात समझ में आ सकती है कि (आख़िरत) परलोक के अमर जीवन के लिए क्या अमल किया जाए। भावनाओं और इच्छाओं से घिरी बुद्धि, पक्षपात और आपसदारी के सम्बन्धों में जकड़ा हुवा वातावरण और आदत, दबाव से कुचली हुई निर्णय शक्ति और सीमित ज्ञान के सहारे, जो कुर्आन के शब्दो में, ''तुम्हें हमने ज्ञान नहीं दिया मगर बस थोड़ा सा'' को चरितार्थ करता है।

मानव जीवन के सभी पक्षों को सामने रखते हुए फैसला करना, मनुष्य के अपने बस से बाहर है। अतः नियम वह बनाये जो प्रत्येक वस्तु पर छाया हो, जो मेहरबान भी हो और प्रत्येक चीज़ का जानने वाला भी हो, जिसका ज्ञान वाह्य और आन्तरिक पर छाया हो, जिससे कोई बारीक से बारीक वस्तु भी छुपी न हो और यह ज़ात, अल्लाह के अलावा और किसी की नहीं हो सकती। अतः इस्लाम, विधायन का अधिकारी (क़ानून बनाने का हक़दार) केवल ईश्वर को समझता है। चूँकि प्रत्येक व्यक्ति ईश्वर से सम्पर्क स्थापित करके उसके तय किये हुए नियमों को प्राप्त नहीं कर सकता इसलिए आवश्यकता पड़ी ऐसे माध्यम और सूत्र की जो ईश्वर से सम्पर्क रखता हो ताकि अहकाम (आज्ञा) प्राप्त कर सके और मानव से भी उसका सम्बन्ध हो ताकि ईश्वर का सन्देश पहुँचा सके, ईश्वर के नियम की सहीह व्याख्या कर सके और उसकी रक्षा का भी उत्तरदायी हो। यही लोग धर्मशास्त्र की परिभाषा में अम्बिया और ''मुरसलीन'' (पैग़म्बर) कहलाते हैं।

ब्रह्माण्ड का पैदा करने वाला केवल विधाता मात्र ही नहीं बल्कि संसार का पालने वाला भी है। अर्थात् जिसने पैदा किया है, वही उसके निज़ाम (व्यवस्था) को चला भी रहा है। चलाने का तात्पर्य यह नहीं है कि संसार बिना निश्चित मार्ग और बिना निश्चित उद्देश्य के लुढ़कता चला जा रहा है।

सभी दार्शनिकों का इस पर इत्तिफ़ाक़ (सहमति) है कि द्रव्य की रफ़्तार का रुख़ प्रगति की ओर है, वह नीची मंज़िल को छोड़कर उच्च मंजिल की ओर अग्रसर (गामज़न) है। छोड़ी हुई मंजिल की ओर कभी पलट कर नहीं आता। माद्दीयत परस्त (भौतिकवादी) जिसको द्रव्य का 'स्वाभाविक रुजहान' कहते हैं। हम धर्म वाले उसी को ईश्वर की दलील और प्रमाण मानते हैं।

**(जारी)**

# मुस्लिम बुद्धजीवी परम्परा और इमाम जाफ़र सादिक़ (अ०)

**मु0 र0 आबिद**

अरब में इस्लाम से पहले के समय को अज्ञानता का काला युग कहा जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि अरब ज्ञान, कला और शिल्प से बिलकुल कोरे थे। वे न तो निरे अनजान और न ही गंवार। दूर–दूर के देशों से उनके व्यापारिक सम्बन्ध थे। उनका जल–परिवाहन बहुत ही विकसित था। उनमें 'अनुमान' कला भी बड़े ऊँचे स्तर की थी। कविता और साहित्य से उनका लगाव बहुत गहरा था। इसीपर उनकी वह अकड़ थी कि वे अपने को 'अरब' (बोलने वाला) और दूसरे राष्ट्र और जातियों को 'अजम' (गूँगा) कहते थे। इस पर भी मक्के जैसे Metropolis में पढ़ने और लिखने वाले (साक्षर) गिनती के थे। यानि उन्हें लेखिनी और लेखन से रुचि बहुत ही कम थी। इस तरह समाज 'ज्ञान–सत्कार' से खोखला और ज्ञान के भले अवशेषों से कंगाल था। इसे हम बुद्धजीवी परम्परा का अकाल कह सकते हैं।

इस्लाम की पहली 'ब्रह्मवाणी' (वहि) ही 'पढ़िये' और 'क़लम' और 'जो नहीं जानता' वाली हद तक शिक्षा की बात करती है। इसके रसूल का 4 सूत्रीय कार्य विधान है:

1– ख़ुदा की आयतों (श्लोकों) का पाठ यानि ज्ञान–रुचि का बढ़ावा।

2– पवित्रीकरण अर्थात शिक्षा के लिए अनिवार्य अनुशासन (Discipline)।

3– 'ग्रन्थ'–शिक्षा यानि सैद्धान्तिक शिक्षा।

4– 'सूझबूझ' (हिकमत) या बौद्धिक शिक्षा अर्थात कार्यात्मक (Practical) और उपयोगीय (Applied) शिक्षा।

इसे यूँ कह सकते हैं कि इस्लाम 'क़लम' ग्रन्थ और बोध का धर्म है। ये सब तो बुद्धिजीविकता ही के लक्षण हैं। यानि इस्लाम 'बुद्धजीविकता (Intellectualism) का धर्म है।

इस्लाम ने अरब समाज में जो पहली और सबसे बड़ी क्रान्ति पैदा की थी वह इसी 'बुद्धजीविकता की परम्परा का बोना और उसकी फसल उगाना थी। हज़रत मुहम्मद (स0) का जीवन इसी को समर्पित रहा।

इस्लामी बुद्धजीवी परम्परा का सबसे अधिक सशक्त हस्ताक्षर हज़रत अली (अ0) हुए। यूँ तो हज़रत मुहम्मद (स0) के बाद जो राजनैतिक दृश्य उभरा उसनें उन्हें घर की चारदीवारी में सिमट रहने पर मजबूर कर दिया। फिर भी अपना परिचय 'मुहम्मद (स0) के दासों में एक दास' और मुहम्मद (स0) का सबसे होनहार शिष्य' के रूप में कराने वाले अली (अ0) का नाम इतिहास में इस्लामी शास्त्रीय ज्ञान के हर विषय जैसे 'हदीस (रसूल स0 की सूक्तियाँ), तफसीर (कुर्आन शास्त्र), सीरत (रसूल स0 की जीवनी), अक़ाएद (धर्म विश्वास) और अहकाम (धर्मविधान) के साथ–साथ अरबी भाषा, साहित्य और व्याकरण के संस्थापक के रूप में आता है। उनके प्रवचनों, पत्रों और

सूक्तियों का संकलन, 'नहजुलबलाग़ा' ज्ञान–विज्ञान का सागर हैं।

हज़रत अली (अ0) के बाद इस्लामी बुद्धजीवी परम्परा के सबल प्रतीक उन्हीं के घराने वाले, रहे। फिर उन्हीं के चाहने वाले। पर अब ये लोग राज की नज़रों में 'शत्रु' न0–1 हो चुके थे, इनकी गतिविधियों और लोगों से मेलजोल पर सरकार की कड़ी निगरानी होने लगी, वे कभी बन्दी और कभी 'नज़रबन्दी' में रहे। उन्हें इस तरह ज्ञान विज्ञान के प्रचार–प्रसार का अवसर कम मिल सका। फिर भी बुद्धजीवी परम्परा को इन लोगों ने मरने न दिया।

इमाम जाफर सादिक़ (अ0) के समय में राजगद्दी डावाँडोल रही और अपने में जूझ रही थी। इस तरह उसमें कम से कम बुद्धजीवी रास्ते में रोड़ा बनने की सकत न रह गई। इस माहौल का भरपूर फायदा उठाकर इमाम (अ0) ने ज्ञान विज्ञान का एक बहुत बड़ा आश्रम बना लिया जिसमें एक–एक समय हज़ारों हज़ारों शिष्य और ज्ञान–विज्ञान के प्यासे उमंड आये और उनकी बेजोड़ ज्ञान सभा से ज्ञान विज्ञान की नियमित शिक्षा लेने लगे। आपका ज्ञानाश्रम एक खुले विश्वविद्यालय (Open University) का रूप ले चुका था जिसमें समाज के विभिन्न स्तर के, अलग–अलग दृष्टिकोणों के लोग, आयु, जाति, धर्म सम्प्रदाय के भेद भाव के बिना शामिल थे। बुद्धजीवी श्रेष्ठतम परम्परा के अनुसार यहाँ उनके लिये भी जगह थी जो ख़ुद इमाम से धार्मिक, साम्प्रदायिक या सैद्धान्तिक मतभेद रखते थे। इसमें नाना प्रकार के विषयों पर चर्चा होती। यहाँ धार्मिक लेबिल वाले शास्त्र जैसे तफसीर, हदीस, फिक़ह (इस्लामी धर्म–विधि शास्त्र) आदि ही नहीं दर्शन शास्त्र, तर्कशास्त्र, भौतिक विज्ञान (Physics), रसायन विज्ञान (Chemistry), खगोल विज्ञान (Astronomy), और पराभौतिकी (Metaphysics) यानि ज्ञान–विज्ञान की सभी शाखाएँ इसमें पढ़ायी जाती, उन पर चर्चा होती और शोध होता।

इस विश्वविद्यालय की एक विशेषता यह भी थी कि बहुत से लोग क़लम क़ागज़ से लैस रहते। जो भी इमाम बोलते तुरन्त लिख लेते। इस तरह क्लास नोट्स (Class-notes) लेने की शायद पहली कोशिश थी। इन्हीं क्लास नोट्स के आधार पर आपके 'साथियों' और शिष्यों ने पुस्तकें लिखीं। एक एक ने अकेले सैकड़ों किताबें लिखीं। इनमें 400 सज्जनों ने धर्मविधि से जुड़े सवालों के इमाम की ओर से दिये गये जवाबों पर आधारित 400 पुस्तकें लिखीं जो ''उसूले अरबआमिआत'' (चार सौ सिद्धान्त) कहलाईं। इन्हीं के आधार पर आगे चलकर चार महान हीदस संकलन बने। ये हैं: 'अलकाफी' (अबुजाफर मुहम्मद बिन याकूब कुलैनी), 'मन ला यहजर फक़ीह' (शेख़ सदूक़), अत्तहज़ीब व 'इस्तेबसार' (शैख तूसी 'शैखुतताएफा')

इस विश्वविद्यालय के बहुत से पढ़ने वाले अपने अपने छेत्र में अग्रणीय और महान हुए जिनहें आम तौरसे विषय का 'इमाम' कहा जाता है। (शीआ धर्मशास्त्रीय 'इमाम' नहीं) इनमें महान इमाम अबुहनीफा और इमाम मालिक बिन अनस भी हैं। ये दोनों मुसलमानों की दो फिक़हों (धर्मविधि शास्त्रों) के संस्थापक हुए। इमाम मालिक के शिष्य इमाम शाफ़ई हैं जिनके शिष्य इमाम अहमद बिन हंबल हैं यह भी दो फ़िक़्हों के संस्थापक हुए। इस तरह इस्लाम धर्म की चारो फ़िक़्ह (जो क्रमशः हनफी, मालिकी, शाफ़िई और हंबली हैं) के संस्थापक इमाम जाफर सादिक़ के ही सीधे या एक दो माध्यमों से शिष्य हैं। (इस्लाम में प्रचलित पाँचवी फ़िक़ह जाफरी फ़िक़ह है सीधे इमाम से

ली गई है। और जिस पर शीआ धर्म–विधि का आधर है।)

इमाम की शिक्षाओं ही का प्रभाव था कि बुद्धजीवी जगत को एक अछूता क्षेत्र मिला। आपने पाठ–कक्षा में प्रयोगशाला लगा दी यानि ज्ञान जो अब तक दर्शन की गुत्थियों में उलझा था उसे प्रयोग का रास्ता दिखाया जिससे ज्ञान विज्ञान (Sceenee) में बदल गया। मुस्लिम अरब ज्ञानजगत से पहले का यूनानी ज्ञान दर्शन (Philosophy) की सीमा लाँघ न पाया था।

इस सिलसिले में सबसे पहला, सबसे बड़ा और सबसे उचा सदृश्य काम इमाम के एक सुख्यात शिष्य जाबिर (बिन हैयान) का हैं जिन्होंने इमाम की प्रयोग–प्रधान शिक्षाओं से प्रेरणा लेकर एक महान क्रान्तिकारी पहल की। उन्होंने सुसज्जित महान प्रयोगशाला बना डाली और इसमें किये गये अपने प्रयोगोंसे अलकेमी (Alchemy) और रसायनिक दर्शन को एक नियमित विज्ञान यानि रसायन विज्ञान (Chemistry) बना दिया। इसी कारण वह रसायन पितामह (Father of Chemistry) कहलाए। उन्हें लातिनी (Latin) भाषा में Geber के नाम से जाना जाता है और इसी नाम से आज के विज्ञान जगत और विज्ञान इतिहास में मशहूर हैं। उन्होंने रसायन के अलावा भौतिक विज्ञान (Physics) चिकित्सा विज्ञान (Medical Science) विष विज्ञान (Toxicology) आदि पर कई किताबों की रचना की थी।

बुद्धजीवी और ज्ञान विज्ञान के प्रसार–प्रचार में इमाम के गौरवपूर्ण कामों ने वातावरण में वह चमक दमक घोल दी कि कुछ समय बाद अब्बासी ख़लीफा हारून रशीद ने ज्ञान–विज्ञान के संरक्षण में ही कुशल मंगल समझा। हारून के काल में ज्ञान, शिल्प, विज्ञान, टिक्नालॉजी का वह विकास देखा जो किसी दूसरे अब्बासी शासक या अरब राजधानी के साये में (शायद) न मिल पाया।

इमाम की बुद्धजीवी विकास प्रचार के दूरगामी प्रभाव व मान्यता की मिसाल जामिआ अज़हर (अज़हर विश्वविद्यालय), क़ाहिरा, मिश्र भी हैं जो विश्व के आधुनिक विश्वविद्यालयों में प्राचीनतम हैं। इसे मिश्र के एक फातिमी ख़लीफा हाकिम बिअम्रिल्लाह ने स्थापित किया था। वह इमाम का वंशज भी था और उच्चकोटि का खगोल वैज्ञानिक और लेखक था जो ज्ञान–विज्ञान के विकास में तत्पर रहा।

अन्त में इमाम की कुछ बौद्धिक सूक्तियाँ लिखकर विदा चाहूँगा। इन सूक्तियों से आपके दृष्टिकोण को एक हद तक समझने में मदद मिलेगी। ये बुद्धिजीवी परम्परा और विकास के निर्देशिक सिद्धान्त मालूम पड़ते हैं।

☐ ज्ञानवर्धन करो क्योंकि ज्ञान तुम्हारे और अल्लाह के बीच एक ऐसा माधयम है जो दिलों को और संयमी और चिन्तन में शुद्धता पैदा करता है। मानव ज्ञान के तत्थयों को छोड़कर अन्धविश्वास को और मायामोह को ले लेता है।

☐ राजा लोगों पर राज्य करता है लेकिन ज्ञान राजाओं पर शासन करता है। जब तुममें अल्लाह का डर संयम पैदा हो जाए तो समझो तुमने ज्ञान पाया है और जब ज्ञान पर गर्व आ जाए तो समझो कि तुम्हें अज्ञानता ने घेर लिया है।

☐ तीन चीज़ों एवं प्रदर्शन (अपना–अपना दिखावा), घमण्ड और दिखावे से ज्ञान प्राप्त न करो। ज्ञान–प्राप्ति के लिए तीन चीज़ें अज्ञानता में रुचि, ज्ञान में मनमराउपन और लज्जा को छोड़ दो।

| | रसूले ख़ुदा हज़रत मुहम्मद(स0) | हज़रत इमाम जाफर सादिक़(अ0) |
|---|---|---|
| **शुभ–नाम** | मुहम्मद | जाफ़र |
| **कुन्नियत** (सम्बन्ध सूचक उपनाम) | अबुल क़ासिम (क़ासिम के पिता) | अबु अब्दुल्लाह (अब्दुल्लाह के पिता) |
| **लक़ब (उपनाम)** | मुस्तफा, मुजतबा ................ | सादिक़, साबिर ................ |
| **जन्म** | शुक्रवार/जुमा 17 रबीउलअव्वल 9 मई 570 ई0 | शुक्रवार/(जुमा) 17 रबीउलअव्वल 83 हि0/702 ई0 |
| **जन्म–स्थान** | मक्का (हिजाज़ प्रान्त, अरब) | मदीना (हिजाज़ प्रान्त, अरब) |
| **पिता श्री** | अब्दुल्लाह | (इमाम) मुहम्मद बाक़िर (अ0) |
| **पूण्य माता** | आमिना | उम्मे फ़रवा |
| **दादा** | आमिर (शैबतुलहम्द अब्दुल मुत्तलिब) | (इमाम) अली ज़ैनुलआबिदीन (अ0) |
| **दादी** | फ़ातिमा (सुपुत्री उमर) | फातिमा (सुपुत्री इमाम हसन अ0) |
| **नाना** | वहब (सुपुत्र अब्दे मनाफ) | क़ासिम (सुपुत्र मुहम्मद सुपुत्र अबुबक्र र0) इमाम ज़ैनुलआबिदीन के ख़लेरे भाई |
| **पत्नी** | ख़दीजा (सुपुत्री खुवैलिद)+ 14 अन्य | 2 + कनीज़ें (दासियाँ) |
| **सन्तान** | तीन पुत्र + एक बेटी (कुछ रिवायतों में तीन और बेटियाँ) | 7 पुत्र + 3 पुत्रियाँ |
| **पिता का स्वर्ग–वास** | जन्म के पहले या जन्म के 2 महीने के अन्दर | सोमवार 7 ज़िलहिज्जा 114 हि0 733 ई0 |
| **नबुवत (बेसत) इमामत** | 40 साल की उम्र में – 27 रजब | सोमवार 7 ज़िलहिज्जा 114 हि0 733 ई0 |
| **शहादत (जन्नत–वास)** | सोमवार 632 ई0 28 सफर या 2 रबीउलअव्वल 11 हि0 | सोमवार 15 शव्वाल 148 हि0 765 ई0 |
| **आयु** | 63 साल (चाँद के साल/Lunar years) | 65 साल (चाँद के साल) |
| **शहादत का कारण** | कुछ रिवायतों के अनुसार ज़हर | ज़हर |
| **मुख्य सेवक** | अनस बिन (सुपुत्र) मालिक | मुफ़ज़िल (सुपुत्र उमर) |
| **मुहर** | लाइला–ह इल लल्लाह (अल्लाह के अलावा कोई भगवान नहीं) मुहम्मदुर रसूलुल्लाह (मुहम्मद अल्लाह के रसूल/ईश्वर के विशेष दूत हैं) | अल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैई (अल्लाह हर चीज़ का पैदा करने वाला/सृष्टि–कर्ता है) |

## ''औरतों से बहुत ज़्यादा भलाइयाँ करो।''

# इतिहास और इस्लाम में औरत की हैसियत

**(पिछले शुमारे से आगे)**

## औरत का जीवन और मान

औरत के जीवन और मान के बारे में जाहिलियत वाले लोगों का विचार बहुत ही अजीब है। वे सच के तर्क और वहि के प्रकाश से अलग रहकर जीवन बिताते थे और औरत को ऐश की ज़िन्दगी का साधन समझते थे और उसे मर्द के लिए तरह–तरह के भोग लेने का माध्यम जानते थे।

पढ़ना लिखना उसके लिए निषेध था। रोज़ के कामों के लिए या सगे सम्बन्धियों के यहाँ भी जाने के लिए उसका घर से निकलना जायज़ नहीं था, उसे घर की चारदीवारी के अन्दर जीने की आज्ञा थी और उसे मर्दों के सामने बे अधिकार और मर्द को सारे अधिकार वाला समझते थे। ईसाईयों के इलाक़ों में ख़ुदाई क़ानून से $180^{o}$ के (बिल्कुल उलटे) थे। वे कहते थे कि औरत को ऐसे बन्द कर दिया जैसे कुत्ते का मुँह बन्द किया जाता है। वे इसी दुविधा में थे कि औरत की रूह इन्सानी है या जानवरों वाली।

अफ़्रीक़ा में औरत को बिकाऊ माल समझा जाता था, उसकी हैसियत गाय, भैंस और भेड़ बकरी से ज़्यादा नहीं थी। जिसके पास जितनी औरतें होती थीं उसे उतना ही बड़ा समझा जाता था। औरत का मोल लेना देना आम था उससे बैल का काम लेने का भी आम चलन था। हर साल उनका बाज़ार लगता था जहाँ शादी के क़ाबिल (जवान कुंआरी) लड़कियों को बेचा जाता था।

भारत में पाँच साल की लड़की की शादी कर दी जाती थी, उनका कोई हक़ नहीं था। औरत का जीवन मर्द की देन समझा जाता था। जिसका पति मर जाता था तो पति के साथ उसे भी जीते जी चिता में जला दिया जाता। बेवा औरत को हर चीज़ से ज़्यादा नीचा तुच्छ समझा जाता था। आज भी अख़बार में ख़बरें होती हैं कि बहुत से हिन्दू दहेज़ न जुटाने के कारण बचपन में ही लड़की को ठिकाने लगा देते हैं।

चीन, तिब्बत में औरत चारदीवारी में ही काम कर सकती थी और बस। उसके चलने की ताक़त कम करने को बचपन से ही उसके पैदा होते ही उसके पैरों में लोहे की जूतियाँ पहना देते थे। 15 साल की होने पर इन जूतियों को उतारा जाता था।

ज्ञान दर्शन (Learning + Philosophy) केन्द्र यूनान (Greece) में लड़की पैदा करना जुर्म था। जिसके दो लड़कियाँ हो जाती थीं उसके ख़िलाफ कचहरी में मुक़द्दमा कर दिया जाता था, उस पर जुर्माना किया जाता था और अगर तीसरी बार लड़की होती थी तो उसे फाँसी देने का हुक्म हो जाता था।

अरब प्रायद्वीप (Peninsula) में जैसा कि क़ुर्आन मजीद में कहा गया है, आमतौर से लड़कियों को क़ब्र में ज़िन्दा गाड़ दिया जाता था।

''जब उनमें से किसी को लड़की होने की अच्छी ख़बर दी जाती थी तो बहुत दुख से उसका चेहरा काला पड़ जाता था और वह इस ख़बर को सुनकर, जो उसकी समझ में बहुत ही बुरी (ख़बर) थी अपने समाज से मुँह छिपाता फिरता था और यह सोचता था कि इस लड़की को ज़िल्लत और नीचपन में जीता रहने दे या उसे जीता ही ज़मीन में गाड़ दे, वे कितना बुरा फैसला करते थे।

ये मुद्दा उन जुल्मों का एक टुक्ड़ा है जो जाहिल मर्द औरतों पर किया करते थे। इन मुद्दों का विस्तार से बयान औरतों के बारे में लिखी गई किताबों में है। आप उन्हें पढ़ सकते हैं। कुछ पन्ने पहले औरत के बारे में ख़ुदा के क़ानून के दस मुद्दे लिखे हैं, उन पर भी आपने ग़ौर किया होगा। क़ुर्आन मजीद और रिवायतों में औरत को नीचे लिखी क़िस्मों की तरह कहा गया है:

'उम्म'– माँ, हर चीज़ का केन्द्र, असल सोता (क़िसस–7)

'हर्स'– जाति के बाक़ी रहने का कारण (बक़रा–223)
लिबास– ज़िन्दगी का पहनावा (बक़रा–187)
तसकीन– चैन आराम का कारण (रूम–21)
नेमत– भलाई, ख़ुदा की देन (वसाएलुश्शीआ– बाब औलाद)
रैहाना– पंखड़ी, नर्म

मर्दों और जवानों को जो शादी कर चुके हैं या शादी करना चाहते हैं उन्हें इस सुन्दर और फायदे देने वाली जीती चीज़ और उसकी रूहानी बातों पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान देना चाहिए। नबी, इमाम, अल्लाह वाले, ज्ञानी, जानने वाले, पढ़े–लिखे, दार्शनिक, समझदार, साधु, क़लमकार, धर्म के बड़े–बड़े जानने वाले, ख़ुदा के नेक बन्दे औरत से ही हुए हैं और यही आदमी की ज़िन्दगी में इन अच्छाइयों और भलाइयों का अस्ल सोता है।

माँ–बाप के लिए ज़रूरी है कि अपनी बेटियों में कमाल, ऊँचाई पैदा करने की ज़्यादा से ज़्यादा कोशिश करें और उनकी इन्सानी तरबियत करने में जी जान लगा कर जतन करें। उनके पतियों के लिये ज़रूरी है कि वे उनके हक़ का पास करें ताकि वे मैके और सुसराल के सभी हक़ का पास करते हुए नेक पौध (Generation) की तरबियत के लिए तैयार हो जायें और इससे मोमिन समाज को रूहानी ख़ूराक मिल जाए।

एक ईसाई धर्म की लड़की जंग में बन्दी होने के बाद इमाम अली नकी (अ0) की सेवा में आती है और इमाम व जनाब हकीमा ख़ातून (इमाम की बहन) के साये में पल पोस कर उनकी कोख दुनिया में न्याय फैलाने वाले बारहवें इमाम के जन्म के लिए तैयार हो जाती है।

औरत अपनी सकत से कमालों और सच्चाईयों का सोता है जो 'वहि' की हिदायत की रौशनी और ख़बर के उस्ताद (रसूल स0) के माध्यम से अपने काम पर चलकर, अपने काम पूरा कर हमेशा वाली निशानियों का केन्द्र हो जायगी।

औरत को नीच समझना उसके व्यक्तित्व पर हमला है, उसे बाँधना धर्म के क़ानूनों से बाहर है, उसे झिड़कना, मैके न जाने देना, उसके साथ नाक भवें चढ़ाकर जीवन बिताना, रोजाना के कामों में उसे उकताना, बाहर जाते समय उससे लड़ना–झगड़ना, उसकी चाह चाहतों को पूरा न करना, ख़ासकर सेक्स चाह को पूरा न करना, ये सारी अनचाही बातें धर्म की दृष्टि में घिनावनी और खुला हुआ जुल्म है।

अगर आप चाहते हैं जीवन का मकान प्यार मुहब्बत की नींव पर खड़ा हो तो औरत के वयक्तित्व का पास लिहाज़ कीजिये और उसको अपना प्यार बताइए, उसका दिल रखिये और घरेलू काम काम में उसका हाथ बटाइये, उसे पीड़ा न पहुँचाए, अगर घर के कुछ काम वह पूरा न कर सके तो उसकी अनदेखी करें ताकि जीवन की मिठास चख सकें। इस तरह ख़ुदा की इबादत भी हो जायेगी। वह मानवता की खेती है और इसकी भलाई का सोता है, आपके जीवन का पहनावा (साज) है, दुनिया का नर्म नाज़ुक फूल है, आपके पास ख़ुदा की नेमत है।

रसूल (स0) ने औरत को ऐसी ही प्यारी, चहीती ठहराया है जैसे ख़ुशबू और नमाज़ आपकी चहीती है।

''दुनिया की चीज़ों में औरत और ख़ुशबू मुझे प्यारी हैं और नमाज़ मेरी आँखों की ठण्डक है।''

अगर आदमी औरत के अधिकारों का पास लेहाज़ करे, उसके व्यक्तित्व का आदर करे और उससे नेक, भले बच्चे पैदा करे तो उसकी फायल (File) मरने के बाद भी बन्द न होगी और वह अपनी व औलाद के नेक व पाक कामों से फायदा उठाता रहेगा।

रसूल (स0) का कहना है:

'जब आदमी मर जाता है तो उसके कर्म का सिलसिला टूट जाता है लेकिन तीन चीज़ों से यह नहीं होता: बाक़ी रहने वाला (चलता रहने वाला) सदक़ा, जिसके ज्ञान से दूसरे फायदा उठाते हैं और उस नेक बेटे (बेटी) से जो उसके लिए दुआ करता है।

बस, माँ–बाप को अपनी बेटी का मान जानना चाहिए और मर्दों को अपनी भली बीवियों की क़द्र करना चाहिए क्योंकि बीवी और बेटी के बाप होने में इन्सान के लिए दुनिया व आख़िरत की भलाई है।

इदारा

# मुख्य समाचार

## आयतुल्लाह सीस्तानी मद्दज़िल्लहू ने इराक़ी अवाम से इत्तेहाद की अपील की

**नजफ अशरफ।** इराक़ के रूहानी रहनुमा आयतुल्लाहिल उज़मा सैय्यद अली सीस्तानी मद्दज़िल्लहुश्शरीफ ने मुल्क में अवाम के इत्तेहाद को बाक़ी रखने की ज़रूरत पर ज़ोर दिया है। सूत्रों के मुताबिक़ आयतुल्लाह सैय्यद अली सीस्तानी साहब ने इराक़ी पार्लियामेण्ट में रुकन जलालुद्दीन सग़ीर से नजफ अशरफ में मुलाक़ात में कहा कि जहाँ तक मुमकिन हो सके इराक़ी अवाम के इत्तेहाद को बाक़ी रखने के लिए कोशिश करनी चाहिए और यह वह चीज़ है जो दुश्मन नहीं चाहता।

आयतुल्लाहिल उज़मा सै0 अली सीस्तानी मद्दज़िल्लहुश्शरीफ ने यह भी कहा कि जो लोग बग़दाद में सब्र करके रह रहे हैं और यह सब तकलीफें और मुश्किलें बर्दाश्त कर रहे हैं वह उलमा की राय के क़रीब हैं। उन्होंने इसी साल लाखों हुसैनी अज़ादारों के कर्बला की तरफ मार्च को एक अज़ीम कामियाबी क़रार दिया। ध्यान रहे कि अमरीका, बिर्टेन की सरपरस्ती में दहशतगर्दों की तरफ से कई बम धमाकों के बाद भी एक अन्दाज़े के मुताबिक़ 60 लाख से ज़्यादा अज़ादारों ने शोहदाए कर्बला के चहल्लुम के मौक़े पर कई इराक़ी शहरों से कर्बला—ए—मोअल्ला का पैदल सफर किया और वहाँ पहुँच कर रसूल (स0) के नवासे को ख़िराजे अक़ीदत पेश किया।

## ख़ान-ए-काबा के क़रीब आलीशान इमारत का निमार्ण

**दुबई—** मुसलमानों की मुक़द्दस इबादतगाह ख़ान—ए—काबा के क़रीब जहाँ हर साल लाखों मोमिनीन हज और उमरा अदा करने के लिए हाज़िर होते हैं वहाँ आसमान छूती हुई इमारतें बन रही हैं जिसे बहुत से उलमा और मुस्लिमानों ने इस अज़ीम इबादतगाह के एहतेराम को कम करने वाली कोशिश बताया है। हरम शरीफ के सामने एक लम्बी—चौड़ी इमारत एहराज "बैतुलमाल" बन रही है जिसमें खेल कूद के सामान के साथ फास्ट फूड, औरतों के सिंगार और नए—नए सामान की दुकानें होंगी।

बहरहाल ख़ान—ए—काबा का एहतेराम यह है कि इसके क़रीब को ऊँची इमारत न बने ताकि काबा का एहतेराम बाक़ी रहे। मौजूदा सऊदी हुकूमत से पहले कभी हरमैन शरीफैन में ख़ान—ए—काबा और मुक़द्दस रौज़े के क़रीब कोई ऊँची इमारत नहीं तामीर की थी लेकिन वक़्त की मार देखिये कि मौजूदा हुकूमत बराबर ऊँची से ऊँची इमारत तामीर कर रही है और एहतेराम का कोई ख़याल नहीं है खुदा करे यह इमारत न बने। याद रहे कि मुसलमानों की अज़मत और कामियाबी में हरमैन शरीफैन का एहतेराम शामिल था जब से मौजूदा सरकार ने एहतेराम को बर्बाद करना शुरु किया मुसलमान पूरी दुनिया में ज़लील व बेइज़्ज़त हुए जा रहे हैं मुसलमानों की बुलन्दी का राज़ हरमैन शरीफैन के एहतेराम में छुपा हुआ है।

# शीआ-सुन्नी फसाद के लिए अमरीका करोड़ों रुपये ख़र्च कर रहा है: मौलाना कल्बे जवाद

**लखनऊ।** क़ाएदे मिल्लत मौलाना कल्बे जवाद साहब क़िब्ला ने मस्जिद आसफी में जुमा के ख़ुत्बे के दौरान दुआ के मौज़ू पर लोगों से ख़िताब करते हुए कहा कि मुसलमानों को चाहिए कि वह ख़बरदार रहें क्योंकि इसराईल और अमरीका की तरफ से मुसलमानों में इख़्तेलाफ फैलाने की बराबर साज़िशें हो रही हैं। शीआ—सुन्नी फसाद कराने के लिए अमरीका करोड़ों डालर ख़र्च कर रहा है जिसके लिये नये—नये हत्कण्डों का इस्तेमाल किया जा रहा है जिसमें सबसे असरदार किरादार ख़रीदे हुए उलमा और ज़ाकिरों की ज़हरीली तक़रीरें हैं जो शीआ सुन्नी के ख़िलाफ होती हैं। यह सब तक़रीरें इण्टरनेट पर मौजूद हैं। मौलाना ने कहा कि इराक़ में अब तक आत्मघाती हमलों में जो मोमिनीन मारे गये हैं इसके असल ज़िम्मेदार यही मुक़र्रिरीन है जो साज़िश के तहत तक़रीरें करते हैं और इस की सी0डी0 बना कर दूसरे फिरक़े के उलमा अपने नौजवानों के जज़्बात को भड़काते हैं और इसी बहकावे में आकर वह अपने साथ—साथ दूसरे बेगुनाह लोगों को भी बम से उड़ा देते हैं। मौलाना ने मुअ्तबर ज़रियों का हवाला देते हुए कहा कि ज़ायेरीन की एक जमात जो इराक़ गई थी उसने जब आयतुल्लाहिलउज़मा सै0 अली सीस्तानी मद्दज़िल्लहुश्शरीफ से मुलाक़ात की तो उन्होंने ज़ोर देकर यह बात कही कि आप लोग अपनी तक़रीरों, अपनी महफिलों और मज्लिसों में ऐसी तक़रीरों से परहेज़ करें जिससे मुसलमानों में आपसी ताल्लुक़ात की आग भड़के और अमरीका और इस्राईल की साज़िशों को और ज़्यादा बल मिले।

# पूरी दुनिया में कर्बला के शहीदों का चहेल्लुम मनाया गया

**लखनऊ।** इतिहास के दामन पर वाक़ेअए कर्बला वह अफसोसनाक वाक़ेआ है जिसमें मज़लूम इमाम अपने बहत्तर साथियों के साथ ज़ुल्म के ख़िलाफ आवाज़ उठाते हुए ज़ालिम के हाथों शहीद हो गये। ज़ुल्म की इन्तिहा तो यह थी कि उन शहीदों के वारिसों को लाशों पर रोने और मातम करने की इजाज़त न दी गई। और कर्बला के क़ैदियों ने अपने मज़लूम शहीदों का चहेल्लुम भी क़ैदख़ानों में घुट–घुटकर किया। इसलिए कि रोने की आवाज़ से हुकमरानों को तकलीफ हो रही थी मगर आज मज़लूम इमाम के अज़ादार कर्बला के शहीदों का चहेल्लुम इस अन्दाज़ से मनाते हैं कि गिरया व मातम की आवाज़ पूरी दुनिया को घेर लेती है और ज़ालिम व जाबिर हुकमरानों को पैग़ाम देती है कि तुमने इमाम हुसैन का पहला चहेल्लुम न होने दिया मगर अब उस इमाम मज़लूम के अज़ादार क़यामत तक चहेल्लुम करते रहेंगे।

याद रहे कि शायद ही कोई ऐसा मुल्क हो जहाँ 20 सफर को इमाम हुसैन (अ0) का चहेल्लुम न मनाया गया हो। इस सिलसिले में इस्लामी मुल्कों के अलावा अमरीका, लंदन, आस्ट्रेलिया, अफ्रीक़ा वग़ैरा में भी बड़े पैमाने पर मज़लूम इमाम का चहेल्लुम मनाया गया।

लखनऊ में मौलाना कल्बे जवाद साहब ने इमामबाड़ा नाज़िम साहब में चहेल्लुम की मज्लिस में ख़ुदा के रसूल (स0) का ज़िक्र करते हुए कहा कि अल्लाह तआला ने उन्हें हिदायत देने वाला नहीं बल्कि हिदायत बनाकर भेजा था, रसूल (स0) का हर काम अल्लाह की मर्ज़ी की तरजुमानी करता है और वह तमाम दुनिया के लिये मुकम्मल हिदायत हैं। मौलाना ने मसाएब के साथ–साथ कर्बला के क़ैदियों का शाम के क़ैदख़ाने से कर्बला में आने का ज़िक्र किया और जनाब उम्मे रबाब और हज़रत ज़ैनब के कर्बला से मदीने जाने से पहले बातचीत इस तरह बयान की कि मज्लिस में दूर–दूर तक मौजूद तमाम अक़ीदतमन्दों के गिरया की आवाज़ ने माहौल को ग़मगीन बना दिया। मज्लिस के ख़त्म होते ही इमामबाड़ा नाज़िम साहब से निकले जुलूस में एक के बाद एक अन्जुमनें बारी–बारी शामिल होती रहीं और यह जुलूस मग़रिबैन के क़रीब कर्बला–ए–तालकटोरा पहुँचा।

# इराक़ में शीआ–सुन्नी में फूट डालने के लिए बड़े पैमाने पर पैसे का इस्तेमाल

## अमरीका के मशहूर सहाफी सेमूरहर्श का ख़ुलासा

**क़ाहिरा।** अमरीका के एवार्डयाफ्ता तहक़ीक़ाती रिपोर्टर सेमूरहर्श ने कहा कि इलाक़े में ईरान के रोल की अहमियत घटाने के मक़सद से बुश सुन्नी और शीआ में इख़्तेलाफ को बढ़ावा दे रहें हैं और वह तेहरान पर अपनी मुद्दत ख़त्म होने से पहले ही हमला करने का इरादा रखते हैं। क़ाहिरा में अमेरिकन युनिर्सिटी में मुनअक़िद एक तक़रीर में मिस्र के सहाफियों, अदीबों और तलबा के मजमे से ख़िताब करते हुए हर्श ने कहा कि अमरीका पुरानी साज़िश दोहरा रहा है और सारे इलाक़े में सुन्नी और शीआ में फूट डालने के लिए पैसे का इस्तेमाल कर रहा है। इनामयाफ्ता सहाफी के मुताबिक़ ईरान, लेबनान और शाम में शीअीयत को कमज़ोर करने के लिये सुन्नी ग्रुपों को मज़बूत करने के मक़सद से माली मदद दी जा रही है। अमरीकी हुकूमत से एक सीनियत सलाहकार ने हर्श को बताया कि हम शीआ असर व ताक़त का बचाव करने के लिए सुन्नियों की ताक़त बढ़ाने के प्रोग्राम पर अमल कर रहे हैं। और इसके लिए जितना भी मुमकिन हो रक़म दी जा रही है। ओहदेदार ने क़बूल किया कि इस सिलसिले में कई मुजरिम लोगों की भी माली मदद की जा रही है जो वाक़ई मुश्किल मुहिम है। नज़्मो नस्क़ के पिछले ओहदे दार फिलंट लीवर्ट ने बुश को बताया कि सारी कोशिश ईरान पर दबाव बढ़ाने के लिए है। इस प्लान के पीछे अस्ल दिमाग़ उपराष्ट्रपति डिक चेनी, क़ौमी सलामती मामलों के सलाहकार ऐलेट अब्रमस और सऊदी अरब के क़ौमी सालामती सलाहकार प्रिंस बंदर बिन सुलतान हैं। प्रिंस बंदर अमरीका में अपने मुल्क के 22 साल सलाहकार रह चुके हैं। हर्श का कहना है कि इस मुहिम में अमरीका और सऊदी अरब इसलिए साथ–साथ हैं क्योंकि दोनों ही ईरान का ख़तरा महसूस करते हैं।